

१५ व ४५ सत्वा



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 वनं वा नर्तयन् सा वरा न नाहा । मवाधन ह वना न न । मवाध

१७। इमं नमो निनमः ॥ १७। इमं नमो निनमः

१७ नृपि एकविवदत्त १८ यन्मोक्षयुक्तमात्मनः कलधिवृद्धि
ग्राह्यते वा त्रैलोक्यात्स ज्ञाने वृत्तिप्रदा नमः शुकजसूत्रे

॥ यच्चिकीक्षुष्येह ह्रीन् ॥ यच्चिमयहृद्योत्पन्नमिनामभ ॥ नमः

काशिकावली प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ २ हे सुतिदत्तानन्द

१० १६ ॥ १७ ॥ मयानसा जड ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥



॥ श्रीगणेशाय ॥



20

॥ आयावनि ॥ ॥ आयावनि ॥

ॐ

१००० मर

२३३ नृक। नृक न॥

[illegible]

हामरा ॥ चयादुरुनस्य हकाजस्य मरौवति ॥ यद्वर्गगद्ययस्य द्द्वर्गगद्ययस्य रवति ॥ ततहवि ॥ तद्वि ॥
 तहवि ॥ वाकहवि ॥ वाग्यवि ॥ वाहवि ॥ ॥ का ॥ धृति ॥ धृ ॥ का ॥ सकाजस्य तवर्गस्य चकाजलव
 वानेन चया ॥ गलकाजववा ॥ मोयथास्य नरवत ॥ कस्यवति ॥ कथवति ॥ कस्यदयति ॥ कस्यद
 यति ॥ कस्यव ॥ कस्यव ॥ ततविर् ॥ तद्विर् ॥ ततल ॥ क ॥ तद्विर् ॥ ॥ नल ॥ ॥ लकाज ॥ दुरुनः
 स्यतवर्गस्य चूर्त्वनरवति ॥ विन ॥ विन ॥ यन ॥ यन ॥ ॥ धृति ॥ धृ ॥ का ॥ सकाजस्य तवर्गस्य ॥

यकाजवर्गस्य ॥ धृति ॥ कस्यवति ॥ कस्यव ॥ कस्यव ॥ कस्यटीक ॥ कस्यटीक ॥ ततटीक ॥ तटीक ॥ ॥
 ताल्लि ॥ तवर्गस्य लकाजवर्गस्य लकाजवर्गस्य रवति ॥ ततलूनाति ॥ तलूनाति ॥ रवान्निखति ॥ रवान्निख
 ति ॥ मूकस्य द्विपशंदा ॥ वरुवर्जिताय वल ॥ सानूनासिका निवतूनासिका ॥ गणसानूनासिक ॥ वलका
 वानकाजस्य रवति ॥ नसि ॥ यकाजवर्गस्य तवर्गस्य चूर्त्वनरवति ॥ रवान्निख ॥ रवान्निख ॥ ॥
 शनस्य ॥ यदानवर्गमानादवर्गस्य चूर्त्वनरवति ॥ मटनव ॥ मटनव ॥ मटसीदन्ति ॥

श्री २
७१

स्य ॐ कावमायशतचन्द्रसिंहासहस्रं पूयनतः ॥ वयं ॐ सासः ॥ ह ॐ सः ॥ ॐ ॥ ७ ॥
ॐ तिवो अ न सन्धिः ॥ २७०१ ॥ अथ विसर्जनीयसन्धिनिगद्यतः ॥ ॥ विसर्जनीयस्य सः ॥ वि
सर्जनीयस्य सकाशात् रुवति स्वयं यत्र ॥ कश्च वति ॥ कश्च वति ॥ कश्च वति ॥ कश्च वति ॥ ॥ १०
कृष्णः कश्चो वा ॥ विसर्जनीयस्य कश्च यत्र यत्र सन्धिनिगद्यतः कश्चो वा रुवतः ॥ कश्चो वृष्ट
वत् ॥ ॥ कश्च वति ॥ कश्च वति ॥ कश्च वति ॥ कश्च वति ॥ वाचस्य त्यादयः सः ॥ ॥ द्वा नि वा ॥
लवसं वा ॥ विसर्जनीयस्य सवसं यत्र वा रुवति ॥ कश्च वति ॥ कश्च वति ॥ कश्च वति ॥ कश्च वति ॥ कश्च वति ॥

व. वा उ. पति ।

१ तनवृत्ताः कनयत्वा ॥ २ श्री नदवन्तया ॥ ३ मृदुल्लापश्च

मात्साधवः ॥ वृत्तिः ॥ वृत्तिः ॥ वृत्तिः ॥ वृत्तिः ॥ ॥ अज्ञानानिषू ॥ अज्ञानवि
सर्जनीयस्य वा रुवति ॥ वाचा ॥ दिव्यं किं तेषु यत्र ॥ अहं यति ॥ अहं यति ॥ अहं यति ॥ अहं यति ॥
॥ ॥ अज्ञानिषूतिविगलवत्ता दहा नाना ॥ अज्ञानं यत् ॥ अज्ञानं यत् ॥ ॥ अज्ञानं ॥ अज्ञानान्यवस्य
विसर्जनीयस्य उकाशा रुवति अतिथयत्ता ॥ कश्च यत् ॥ कश्च यत् ॥ ॥ हवः ॥ अज्ञानान्यवस्य विसर्ज
नीयस्य उकाशा रुवति हवयत् ॥ कश्च यत् ॥ कश्च यत् ॥ ददः यति ॥ ददः यति ॥ मनः यत् ॥ मनः यत्

न. ल. ४

[illegible]

१ उषं न वृक्षः उषसा तिसृर्जी तीयस्य भौतवति वृक्षघनं उषः वृक्षः उषः वृक्षः

निकस्य स्वयं वा ॥ नरुपकृति कस्य विसर्जनी यस्य वा नरुहवति स्वयं यच्च ॥ गी ४ यति ४ ॥ गी र्यति ४ ॥
गी व्यति ४ ॥ ध्रु ४ यति ४ ॥ धूर्यति ४ ॥ धूयति ४ ॥ ३०५ ॥ ब ४ ॥ नरुह सर्वश्रितो विसर्जनी यस्य नरुह हवत्यः
वयं च ॥ जात ४ भूत ४ जात क्रम ४ भूत ४ मत ४ भूत गर्भत ४ ॥ ३०६ ॥ निताया दीर्घश्च ॥ नरुहस्य नरुह यत्न
लाया श्रवति पूर्वस्य दीर्घ ४ ॥ पूत ४ प्रमत ॥ पूना प्रमत ॥ शुकि ४ नूया त्मना लाति ॥ शुकी नूया
त्मना लाति ॥ ३०७ ॥ सैषा द्रष्टुं स गदादक्ष गद्यात्यत्रस्य विसर्जनी यस्य लाया श्रवति रुधु पञ्च ॥

उच्चैः शोति । उच्चैः शोति ।
शुद्धिः ।

५१

[illegible]

۱۲

३३

[illegible]

新

हीनं यत्र लसंया श्रुं ॥ आर्विर्मर्त्यः ॥ दवया ॥ नूजामः ॥ समाना इरु वस्य ॥ जगभा रवमि ॥ टि लादा दो ॥ उका नर्वा
 वलार्थः ॥ नामि ॥ नामि यत्र पूर्वस्वदीर्घा रवान ॥ दवानां ॥ सक भूक ववनदवदि ॥ निरिदिग ॥ मूः ॥ दव ॥ द
 वया ॥ पूर्ववत् ॥ किता ल्यः ॥ सक न स्य ॥ कवर्म ॥ दिस्वा ॥ वपखा हा ना इरु वस्य कनचि सुव लरु न स्य सका वस्य
 सका वादे ॥ आरु वमि ॥ दव प्र ॥ नामि ॥ लसिदि ॥ दव म कु लमाहि मूखा कनर्त्त नस्मि नर्थ विदि न थ सिदि ॥ संहा
 रुवमि ॥ समाना ॥ धर्त्ता पा भगा ॥ समाना इरु वस्य ॥ धर्त्ता पा रुवमि ॥ मूधगा ॥ माहि मूखा हि वक म रु हा दः

प्राक् प्राग ॥ रुदवा ॥ रुदवो ॥ रुदवा ॥ १ वं घट पट सुसु कृ म्म द या य का वा न्न ॥ पू लिं गे ॥ शु का नाः
कनामायिमा ब्रीदीनानुविषय ॥ सर्वविश्व उरु डलय मन्त्र श्रुतान्न नू र्णन नू र्णम उरु नू र्णम कर्ण
नू कर्णम सम सिसम् नम एक पूर्व प्र नू श्रुप नू द कि ल उरु नू श्रुप नू श्रुध नू ह नू क नू ह्य द नू नू द नू र्ण
मू श्रुद स द्वि कि मू यूष्मद् अस्मन् एव सर्व द यामुलिङ्ग ॥ न य पू लि न त्व न नूपं न य ई नि वि ष य ता
नू सर्व ॥ उ ओ उ ॥ स वो ॥ ऊ मा ॥ सर्व द न का बाँ ली नू र्ण र्ण य मि ॥ उ नू मि च सर्व चैव क शा ॥
का

৭৫ শ্রী

मारुवनि॥दिवादादो॥नेने॥सर्वस्य॥श्रुति॥सर्वस्यां॥अहि॥वदत्व॥सर्वस्य॥८॥सिन्धु॥पञ्चमकव
चनसर्वसिन्धुनि॥श्रुति॥सर्वस्य॥अहि॥वदत्व॥सर्वस्य॥८॥सिन्धु॥पञ्चमकव
सर्वस्य॥सर्वस्यां॥सर्वस्य॥८॥सिन्धु॥पञ्चमकव
सर्वस्य॥सर्वस्यां॥सर्वस्य॥८॥सिन्धु॥पञ्चमकव
सर्वस्य॥सर्वस्यां॥सर्वस्य॥८॥सिन्धु॥पञ्चमकव

[illegible]

च३

३४६

[illegible]

知

2.

[illegible]

आम्रपूरनाति ३

कार्यवक्षः

यमिनामिधनानुभवां॥नृणां॥पिण्डपदवत्॥अवन्तामाहवाद्यादयः॥कर्तृवत्स्यपंचसुविस्वसः॥७
 तुना॥सकानृपस्यसम्यग्निनमकानस्यानृवनिपंचसुपंचसु॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥
 योधाकर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥
 कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥कर्तृवत्॥
 सप्तानकानुभवां॥नृणां॥पिण्डपदवत्॥अवन्तामाहवाद्यादयः॥कर्तृवत्स्यपंचसुविस्वसः॥७

24

[illegible]

२०० तमा

[illegible]

२१

[illegible]

[illegible]

॥ सावा २ ॥

[illegible]

आ

का

[illegible]

3.

[illegible]

मूथसुवाननपुंसकलिंगाः पुदुर्धनकाकावानः कुलैश्वर्याः कस्यपथमादिनायेकद्वयं ॥ मू
 नाभा मूकावाननपुंसकलिंगाः स्यामावहवनिमूः ॥ मूमायुरुसंतुवावृत्त्यर्थः ॥ कुलैश्व
 कुलैश्वरीयानपुंसकलिंगाः स्यामावहवनिमूः ॥ मूमायुरुसंतुवावृत्त्यर्थः ॥ कुलैश्व
 वयाः सुसमाः गिरिवनिमूः ॥ मूकावाननपुंसकलिंगाः स्यामावहवनिमूः ॥ मूमायुरुसंतुवावृत्त्यर्थः ॥ कुलैश्व
 कलिंगाः स्यामावहवनिमूः ॥ मूकावाननपुंसकलिंगाः स्यामावहवनिमूः ॥ मूमायुरुसंतुवावृत्त्यर्थः ॥ कुलैश्व

उकावडवावृत्त्यर्थः ॥ मूकावाननपुंसकलिंगाः स्यामावहवनिमूः ॥ मूमायुरुसंतुवावृत्त्यर्थः ॥ कुलैश्व
 धिवर्जितपुंसकलिंगाः स्यामावहवनिमूः ॥ मूकावाननपुंसकलिंगाः स्यामावहवनिमूः ॥ मूमायुरुसंतुवावृत्त्यर्थः ॥ कुलैश्व
 लपुण्यपुंसकलिंगाः स्यामावहवनिमूः ॥ मूकावाननपुंसकलिंगाः स्यामावहवनिमूः ॥ मूमायुरुसंतुवावृत्त्यर्थः ॥ कुलैश्व
 वनिमूः ॥ मूकावाननपुंसकलिंगाः स्यामावहवनिमूः ॥ मूमायुरुसंतुवावृत्त्यर्थः ॥ कुलैश्व
 कलिंगाः स्यामावहवनिमूः ॥ मूकावाननपुंसकलिंगाः स्यामावहवनिमूः ॥ मूमायुरुसंतुवावृत्त्यर्थः ॥ कुलैश्व

५ अमलिका

७

[illegible]

शुभमस्तु नमो भगवते.

॥ १६ ॥

॥ खनग ॥ भूखा नस्य मका ॥ २

入部

या

[illegible]

१ कुसुमनाथ दत्त ॥

一

ॐ

मृमृयाः॥मृमृषः॥ ॥मृमृकाः॥मृमृलिः॥मृमृ
मृमृकाः॥मृमृषः॥मृमृकाः॥मृमृलिः॥मृमृ
मृमृकाः॥मृमृषः॥मृमृकाः॥मृमृलिः॥मृमृ
मृमृकाः॥मृमृषः॥मृमृकाः॥मृमृलिः॥मृमृ
मृमृकाः॥मृमृषः॥मृमृकाः॥मृमृलिः॥मृमृ

५२

१॥

मृमृकाः॥मृमृषः॥मृमृकाः॥मृमृलिः॥मृमृ
मृमृकाः॥मृमृषः॥मृमृकाः॥मृमृलिः॥मृमृ
मृमृकाः॥मृमृषः॥मृमृकाः॥मृमृलिः॥मृमृ
मृमृकाः॥मृमृषः॥मृमृकाः॥मृमृलिः॥मृमृ
मृमृकाः॥मृमृषः॥मृमृकाः॥मृमृलिः॥मृमृ

७१

दासुनैरुवनिटादि न्स्थकयाऽपनयाऽ॥७॥ अग्रयत्नमाऽ॥ मयाऽ॥ आदमिवदादव न्निनायान् ॥ लनाऽ॥
 दादवयायु न्तं ॥ युवावोदिव नैनसर्वथा नूहीत्यात्वं ॥ युवात्थी ॥ आवात्थी ॥ यदादव न ॥ आम्हो ॥ यु
 वात्थी ॥ अर्थमर्थं दया ॥ ४॥ सहिगयार्थमादसा दा मुत्थमर्थं न्स्थना वाद लोह वग ॥ ३॥ उत्थी ॥ मर्थ ॥ यु
 वात्थी ॥ आवात्थी ॥ अम्हम ॥ युवादसादाऽपनयात्थमस्थमरुवनि ॥ गका वाहका वादित्व वादित्व
 र्थ ॥ गनाह ॥ आत्वेनरुवनि ॥ अरुवद्वत्त्वं न्स्थत्वेनरुवनि ॥ युवात्थी ॥ अस्मर्थ ॥ ४॥ सित्थसा ॥ ४॥ पु ॥ ४॥

७१

वयाऽ॥ ४॥ सित्थसा ॥ ४॥ पु ॥ ४॥ अरुवनि ॥ गका वाहका वादित्व वादित्व
 वत्त्वं वरुग ॥ लना ॥ मन् ॥ युवात्थी ॥ आवात्थी ॥ युवात्थी ॥ अस्मन् ॥ गवमम ॥ ४॥ सासहिगयार्थमादसादा
 सुवमम न्स्थना वाद लोह वग ॥ गवामम ॥ युवाद ॥ अ ॥ सित्थसादाद वरुग ॥ ७॥ अग्रय ॥ युवया ॥ आवात्थी ॥
 सर्वादिवात्सा ॥ ४॥ सामाकम् ॥ युवादसादा ॥ ४॥ पनयात्थम ॥ आर्क रवनि ॥ युवात्थी ॥ अस्माकं ॥ लनादाद
 लनाकभटाशा ॥ ४॥ युवादसादाय न्स्थकयाऽपनयाऽ॥ ७॥ अग्रय ॥ लयि ॥ मयि ॥ आदं

७१

सि वदाद न नि नाया ॥ त्व नदा द न यो व न ली ॥ यु वा बो दि व व न स र्व ग ॥ मू हा ख्या ली ॥ यु वा ली ॥
 न्ना वा ली ॥ अ द धू न ॥ यु ष्मा लि ॥ मू ष्मा लि ॥ उ त्थी म धी द या ॥ ८ त दि न या यु ष्मा द स्म मु त्थी म धी ॥ ९ ॥
 ना वा द लो रु व न ॥ उ त्थी ॥ म धी ॥ यु वा ली ॥ न्ना वा ली ॥ अ त्थ म् ॥ यु ष्मा द स्म दा ॥ य न या रु स ॥ अ म रु व नि ॥
 न का ना रु का ना दि त्वा रु त्थ र्थ ॥ न ना हा ख्या ली न ॥ ७ ॥ रु व रु त्थ ली न रु व नि ॥ यु ष्मा ली ॥ मू ष्मा ली ॥
 ८ सि य सा ॥ ९ ॥ १० ॥ पंच म्यां ८ सि य सा ॥ ११ ॥ रु व नि ॥ न का ना रु का ना दि त्वा रु त्थ र्थ ॥ १२ ॥ उ का ना उ र्वा ना रु त्थ र्थ ॥ १३ ॥

७२

न दा दे हा द न य द द धू व न व रु त्थ र्थ ॥ त्व न य यु वा ली ॥ न्ना वा ली ॥ यु ष्मा ली ॥ मू ष्मा ली ॥ त व म म द सा ॥ ८ ॥ सा य
 लि त्वा यु ष्मा द स्म दा स्म व म म ॥ ९ ॥ ना वा द लो रु व न ॥ १० ॥ त व म म ॥ यु वा दे हा डा सी त्वा व रु त्थ र्थ ॥ ११ ॥
 य ॥ यु व था ॥ १२ ॥ न्ना व था ॥ १३ ॥ यु ष्मा ली ॥ मू ष्मा ली ॥ १४ ॥ न्ना व था ॥ ना वा द लो रु व नि ॥ १५ ॥
 या न ॥ यु ष्मा द स्म दा ॥ १६ ॥ व रु त्थ र्थ ॥ द्वि ती या लि त्वा न ॥ व रु त्थ र्थ ॥ यु ष्मा द स्म दा र्थ ॥ १७ ॥ न्ना व था ॥
 दे हा रु व नि ॥ की दृ ष्ठा ॥ यु ष्मा द स्म दा व रु त्थ र्थ ॥ द्वि ती या लि त्वा ना ॥ १८ ॥ रु व व न न स रु त्थ र्थ ॥

युवमा ४२

युवमा ४३

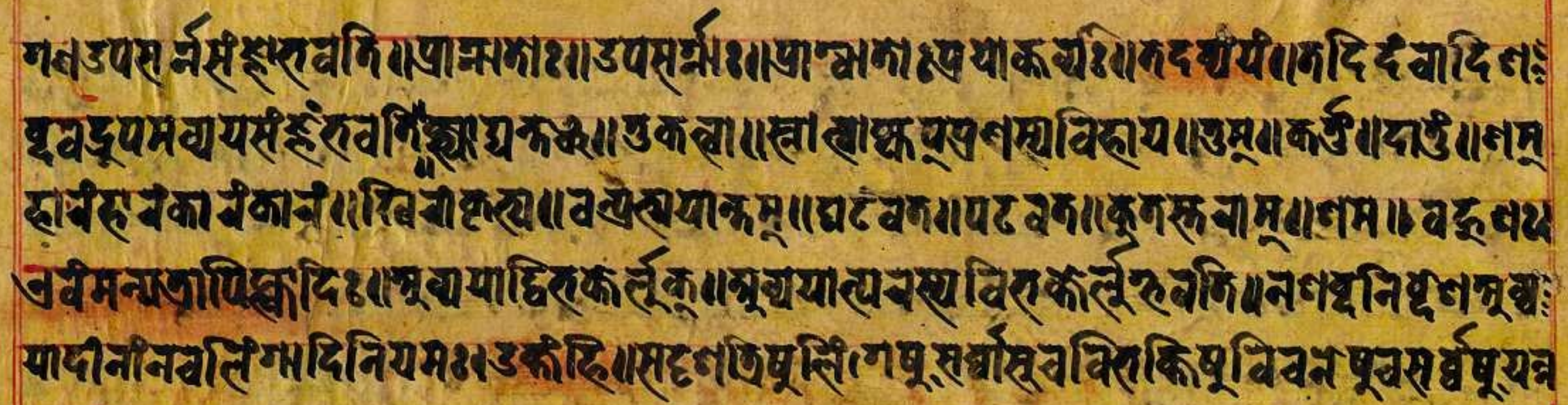
युवमा ४४

युवमा ४५

वत ४१ द्विवचनं न स ह वा त्नीरु वत ४२ वद्वचनं न स ह वषु सा रु वत ४३ क्वचित्त्वया मयैत्यस्मिन्नर्थे त
 मं रु वत ४४ वास्वामी मं स स र्म या त ४५ स्वा मी मं सा य र्म गं त ४६ न मं रु व न ह या द हिनं मा क तं वा र्यं स्वा मी
 वी स ज हा सा चै रु व नो दान या च न र्मा जा वा दा स्य द दानं ह्यं न नो न धू ह द न ४७ ॥ २ ॥ द वा वा म म ता वि षुः
 न च का न्ता ज ना द न ४८ स्वा मी वा व ल वा ज्ञा जा स्वा मी ना शो ना द न ४९ ॥ ३ ॥ न मा वा च क वि ह ह्या ह्यं न ना दी
 य ता धि र्ना ॥ सान न्दा व षु य ग्ना म ष य ग्ना मा न ४९ सू द्ध वि न ४९ ॥ ४ ॥ त्वा मा मा र्जु मा सहि त था र्यु मा द त्म दा त्वा मा ह
 युवा र्था २ कु र्वा २

५१

सना वा द (मोर व नै प च्छा मि त्वा म दा ला ट ॥ य च्छा मा म द रु द के प च्छा मि त्वा ज ग त्स्मै य च्छा मा पा व न य र्वा
 ल वं पू ण रु व ॥ पू णा म म्मा पू ण रु ॥ पू णा म ॥ पू ण रु त्थं ॥ पू णा म र्थं ॥ पू ण रु ॥ पू ण म ॥ पू ण ह्यौ ॥ पू ण मी ॥ पू णः
 ह्या पा उ ॥ पू णा मा पा उ ॥ य मा य व यो ह्य य म मा व यो ॥ य मा वी ॥ य म नो ॥ ल र्वा दी य क पा उ वा ॥ ए डो य
 वी ॥ ए डा वा वी ॥ पू णा य क्का र्क ॥ पू णा स्मा र्क ॥ पू णा व ॥ पू णा म ॥ पू णा य र्वा र्थं ॥ पू णा स्म र्थं ॥ पू णा व ॥ पू णा
 म ॥ पू णा य क्का न ॥ पू णा म्मा न ॥ पू णा व ॥ पू णा म ॥ ना दो ॥ पा दा दो क र्क मा न या य क्का द स्मा दा त्रे क म्मा द त्म

[illegible]



कागारुवन् ॥ नादादध ॥ नदादर्गन्नाभियामाप्स्यथयारुवन् ॥ नदी ॥ लोनी ॥ लोनीमी ॥ पञ्चमी ॥ यउथी ॥ दधि ॥
 दली ॥ गर्वमी ॥ इन्द्रदन्ती ॥ इन्द्रादर्गन्नाभियामाप्स्यथयारुवन् ॥ इन्द्राती ॥ इन्द्राती ॥ गर्वमी ॥
 बूडाती ॥ माउली ॥ मायावली ॥ नाय ॥ कृत्रिया ॥ वार्यादी ॥ माउनी ॥ माउली ॥ उपा ॥ मायाली ॥ उपा ॥
 मा ॥ कृत्रियाली ॥ कृत्रिया ॥ भू ॥ वार्याली ॥ भू ॥ वार्या ॥ इन्द्रसमाह ॥ बलुसध ॥ उपा ॥ सवदानां समाह ॥
 जयी ॥ पृथ्या ॥ लव ॥ पूडपू ॥ पूषसं ॥ या ॥ गवि ॥ वक्ति ॥ क ॥ पू ॥ पृथ्या ॥ रवन् ॥ पूडी ॥ पूडावा ॥ गमिका ॥ गमिकावा

रात्रकवादी लम्पालिका दोनरु वनि ॥ जागवथा पधान् ॥ जागिवाविना इयका नापधदका नाकान्ति यी
मीयययारु वनि ॥ नमी ॥ मरिषी ॥ गूकवी ॥ र्दसा ॥ कूकूटी ॥ वा प्रसा ॥ कन्यका दोनरु वनि ॥ मयका नाउप
धादिनिर्दि ॥ कप्रिया ॥ वेष्मा ॥ सुधमवया वाविना ॥ नः प्रवकवा ॥ कूमावी ॥ किल्लमा ॥ कल्लपुह
य ॥ यधमग्रह ॥ हृदरु विना ॥ मूकग्रह ॥ निगु ॥ ॥ ह्यान्ना द्वा ॥ ह्य कवाविना वाञ्छियामी
यययारु वनि ॥ स्मृती ॥ मृगका ॥ कल्लनी ॥ वाग्रह ॥ पधवदना ॥ कमलनयना ॥ कल्यानकाजा ॥

[illegible]

श्री ५

[illegible]

[illegible]

44

[illegible]

५

सवकावसं संपुदानेनयेवशाश्रयादानादिकवत्समित्याहुः ॥ कार्थकर्मकावकेत्याय
 श्रयायैसंस्कार्यविकार्यवदितयाविरुक्तिरुच्यते ॥ यदहंस्वाश्रयविकइत्यादी ॥ यस्मिन्मवपायन
 कार्य ॥ यत्तुत्वाकवाधानमलापकयोवाकियननसंकर्ष ॥ यत्पूर्ववस्तुयनिर्यायिषमवस्तु कवपाः
 फिःगदिकार्य ॥ कटिकावोटिकावृक ॥ रूपपथमिवाहवशावाययापानिधर्मिसू ॥ सामंसूनामि
 सामपाः ॥ गृहिसर्वकसाकार्याधिपूषिषूदितायाप्रतिगानपूषुनाः ॥ न्यापिहर्षक ॥ गृहिकाभमनदीवरु
 गुपय्यादिष

निःसर्वकाग्रामेनववाहव्यक ॥ विध्यवदरु ॥ उपयुपविपुआहिर्नयावकाः ॥ पनकि गृध्राश्वाग्रामत्रिवि ॥ वदति ४५
 ॥ गृध्राविग्रामेनिर्य ॥ गृध्राविवाधंगदुकिमुग ॥ समयाग्रामेधप्ररुमधा ॥ ७५ ॥ निकषाग्रामेरुलेपाफ
 म्पयमिग्रामेयहान ॥ कालाधनानेवकथयि ॥ मासमश्रककालेयवर्क ॥ गृन्गमास्यदिवधककाण्यो
 कदःधयवर्क ॥ कर्तुविपुभनकियाधयसाधनव ॥ क्रियासिद्युयकावकेकवत्स ॥ र्थरुनायाविरुक्ति
 रुच्यते ॥ क्रियाधयलेकर्मोदीनामयिसंरुच्यते ॥ क्रियासिद्युयकावकेसाधन ॥ हित्रशाणवत्तनामस

क्रियातकलंकापिसफमा॥पसिद्धक्रियायाग्नूपसिद्धक्रियाकनंतशून्यक्रियातकलंवर्षनिदवः
 बोधश्रायाक॥पस्यं पुमालिनिपकिना॥नाकि॥कालं दयिसफमा॥वर्षककावित्तास्वर्कनाकि॥
 विनासहनममननिजावर्षास्वाद्यादिशिथ्य॥अनेत्रपिया॥दिनीयायाषदिरुक्थारवक्ति॥विनीः
 विनायापसर्वरुलनि॥ग्रीनवत्सक्रियाकिंजीविमन॥ग्नूकवात्मां मांरुविनिद्यादियदाद्रु॥सः
 रुवदृलंसाकं साद्यं समंया॥गरुणीया॥सरुविष्णुत्तगनापुनू॥सदस्येष्टामेष्ट॥साकं नयनाः

५७

त्यासलकलदं नावासाद्यं निशिर्द्धन॥साधू॥समीवकुल्लिदमागुनू॥नमः॥स्वस्तिस्वाहस्वधा॥स्वी
 षट्यागवपुधी॥नमानावायत्तय॥स्वस्तिवाह॥सामायस्वा॥पिरुय॥स्वधा॥ग्नूर्त्तमज्ञामत्ताय॥
 त्वर्षदिन्दया॥अकवाग्यवमा॥अगहानात्रमूकि॥ग्नूवागृहद्विहान॥निर्द्धन॥वषष्टि॥निर्द्धन॥
 क्रियागुल्लजानिहि॥समूदायात्पुथकं नर्त्तनवषष्टिसफमोस्यानी॥क्रियायवात्संगवदावाधक॥पु
 ॥क्रियायनपूवा॥गवीकृष्णो॥सयनकोवा॥गमपूवा॥अगवांकलिय॥ग्नूकम॥अगपूवा॥ग्नूदि

श्रीगणेशाय नमः॥

६

राजायमानहकार्यस्थादा नमयादानसंहरवनि ॥ गजापादानपमीयस्मात्पुजाय न ॥ आदादियागवः
 पंचमी ॥ आयाठलिपूजादृष्टादव ॥ वकाबादन्यापिरवनि ॥ नादर्थयुक्ताववक्या ॥ संया मायधर्मधरुनना
 धर्मायसंयमं ॥ धर्ममाकायमभावी धर्नदानाय युक्तय ॥ वकाबा ॥ कृष्णादियागवः ॥ कृष्णायकुक्षितिमिजाय
 दृष्टानिगुलवर्गसूयनि ॥ कृष्णायपंचमीववक्या ॥ रुम्यायुक्त ॥ रुम्यामायुष्पकनस्यर्थ ॥ आसः
 नमायुष्पकनस्यर्थ ॥ निमिरात्कर्मसंयागसकमीववक्या ॥ धर्मलिङ्गिनिर्हन्तिदक्याहन्तिर्कृज

۵۴

[illegible]

७१

यत्तनां समासानि नूयन् ॥ समासश्च नयनाम्ना ॥ नाम्नामनययान्धत्तसमि समासात्तवनि ॥ नयनद्वन्द्वनि पिरुवः
 निराकृतायां पूर्वस्य स्यादो नरुवनि ॥ २२ ॥ स्यादो विपरीतान्धत्तसमासानां हि ॥ सवयद्विधः ॥ अथ यथा वाक् ॥
 पूर्वपादश्च वरुवादिः ॥ कर्मधनयादि गुच्छनि ॥ ननु पूर्वपदपुधना ॥ यथा वाक् ॥ २३ ॥ द्विगुल्युत्तरीयपुधनो ॥ द्वि
 ग्कर्मधनयो वाक् ॥ २४ ॥ उरयपदपुधनो ॥ वरुवादि वल्यपदपुधन ॥ २५ ॥ ननु क्रियासि संवंधान् ॥ उरयपदपुधनः
 नाविधिर्वानुसृत्य समासस्य किं प्रयोजनं ॥ २६ ॥ एकय शमे कल्य मक विरुकि कल्वसमासपया जनैः ॥ अधिमुः

७०

* म२

नूनिहिग ॥ ॥ मुलद्विगीयेकवचनभूमि ॥ मियमधिक्यरव ॥ गीनिविग्रह ॥ विग्रहवदनकिमूयः
 न ॥ अत्रययान्धत्तसमासानां हि ॥ सवयद्विधः ॥ अथ यथा वाक् ॥ २३ ॥ द्विगुल्युत्तरीयपुधनो ॥ द्वि
 ग्कर्मधनयो वाक् ॥ २४ ॥ उरयपदपुधनो ॥ वरुवादि वल्यपदपुधन ॥ २५ ॥ ननु क्रियासि संवंधान् ॥ उरयपदपुधनः
 नाविधिर्वानुसृत्य समासस्य किं प्रयोजनं ॥ २६ ॥ एकय शमे कल्य मक विरुकि कल्वसमासपया जनैः ॥ अधिमुः
 ह्यायां ॥ ॥ समासपुत्रयथा ॥ ॥ समासं वरुमानाया विरुक् ॥ प्रययवपवत्तुवनि ॥ ॥ उकार्थनामयथा ॥ ॥
 यायस्यलिंगस्यरुगपूर्वपुधनिः ॥ ॥ साकस्थायादीयन ॥ नामसंज्ञायां स्यादिति ॥ ॥ अधिमुः सिद्धिनिहिग ॥

॥ सनपुंसकं म॥ सावा श्यीरावानपूस्कलिं गारुवनि ॥ नपूस्कलादुस्व च ॥ मूवायाला वाग्नस्यनस्या
 विरक्तलुरुवनि ॥ अधिभिगृहकार्य ॥ नाममनिका कमनिबिजुली ॥ नावमनिका कमनिजुली ॥ ॥ ऊ॥
 स्वाद (स) संधु क नागामिका नाका नोवक यो ॥ यथासाद (स) यथासद (स) साद (स) वरुमान ॥ समस्यन ॥ गकिम
 नकिम्यक नागिनी यथागकि ॥ पूर्ववत्समासकार्य कृत् ॥ मूगामन ॥ मूका नाक दययाला वाग्नस्यनस्या विर
 क्त नमुरुवनि ॥ मूर्तिवर्जयित्वा ॥ यवमावर्जयित्वा ॥ कुरुस्यसमापंडय कुरुवर्ज ॥ उपकुरुय ॥ ॥

११

वाटाद्या ॥ दाह न्त्येक यावो मुरुवनि ॥ उपकुरुकर्त ॥ उपकुरुकर्त ॥ उपकुरुदहि ॥ मूनन न्तिवि
 लयतासी चम्या मूनरुवनि ॥ उपकुरुदानय ॥ उपकुरुदह ॥ उपकुरुदहि ॥ उपकुरुनिधदि ॥
 ॥ ॥ मूवधामनार्थुयावनि ॥ मूवधामनार्थयनिमा (न) निधययावनि ॥ ययुममान श्ययीला
 वरसमासारुवनि ॥ यावस्वमिना लितवगा वाक्कनामपुयस्वकि ॥ यावमनुमामरुयस्व ॥ मूवावा निवस
 वक ॥ मकि क नामरावा वरु क न्तिनिर्मकि क वरु न ॥ समासयथयानि निवसु लाय ॥ न्त्येवायीलावा

७

नाम्निर्पेवाग्निनामपूजकत्वं ॥ पंचानां गवांसमाहा वं वं ॥ गुप्तं स्वदत्तं संश्रुत्वा नामिका वाः
 का वीवकृत् ॥ नपूजकत्वात्कृत्स्नत्वं ॥ प्रिरुत्तं निवृत्तिः ॥ प्रिरुत्तं निवृत्तिः ॥ प्रिरुत्तं निवृत्तिः ॥ प्रिरुत्तं निवृत्तिः ॥
 नां पापात्समाहा वं ॥ यं व पापं ॥ यं व पापं ॥ यं व पापं ॥ यं व पापं ॥ यं व पापं ॥ यं व पापं ॥ यं व पापं ॥
 वद्वीहि वद्वीहि ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥
 वद्वीहि वद्वीहि ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥

१५

लम्बोक्तं यस्यासलम्बकत्वं ॥ ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥ वद्वीहि वद्वीहि ॥
 विनागा वा यस्यासविषयः ॥ गृहधर्मा यस्यासगृहधर्मः ॥ लालता वनी यस्यासलालता वनी ॥ उ वनी
 कीर्ति यस्यासउ वनी कीर्ति ॥ वक पाप्मा दोन ॥ वक पाप्मा दोन ॥ वक पाप्मा दोन ॥ वक पाप्मा दोन ॥
 वृत्त ध्वजः ॥ पद्मनाभः ॥ ॥ पुजाम ध्यायन्सूक्तः ॥ सूक्तपुजा यस्याससूक्तपुजा ॥ सूक्तपुजा यस्याससूक्तपुजा ॥
 ध्या ॥ नृसकत्वादत्तं सोमा विनिर्दिष्टं ॥ धर्मादन ॥ वद्वीहि धर्मादनपुत्रो यारु वनि ॥ नाय ध्या ॥

महज्जुति॥समज्जुति॥निमज्जुति॥

ॐ

[illegible]

۱۱

[illegible]

विभूमासहदककदिनःपिविरक्तवत्तुवनि॥कृच्छ्रमूकः१॥कांमूकः१॥मूयानि३॥स्यस्यमूयानि४॥
उवसित्तमा॥हृदिस्युधमनि॥हृदिस्युक्॥दिक्षमिमिकुर्व॥कृत्काल१॥वावायूकि१॥दिक्षमदु१॥
पन्धनाह३॥समाससमानाधिक३॥समाककार्थिवादीनामप्यदलापावक३॥सकपिप१॥पार्थिव३॥
सकपार्थिव३॥दवपूजकावाप३॥दववाप३॥नकार्थिनिसत्त्वसक्ति३॥कविरक्त३॥नपदवा३॥
समाधिक३॥आदय्यद३॥समासकसिदामिपदस्यलापारवनि॥वकावाधिकत्यंनिक्तविभू॥

[illegible]

॥ वगलभयस्यसकृदगमि ॥ १ ॥ हंसस्यगमनमिवगमनीयस्याः ॥ साहंसगमनादि कसंख्यसंहायां ॥ दि
 कसख्यालक्षणे संहायां विषयपत्रुत्या ॥ २ ॥ समस्यककस्यबुधारुवति ॥ अविग्रहा निख्यसमासः ॥ ३ ॥ मूत्रस्य
 स्यपदविग्रहापि ॥ ४ ॥ दिक्रिभाभिः ॥ ५ ॥ सफप्रमाः ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ निसमासयक्रिया ॥ ८ ॥ मूत्रगद्विमानि ॥ ९ ॥
 ॥ १० ॥ कषांपूर्वाका नां नामपदानां मूर्धन्यक न पुतिपादनहिन नूतिनद्विग ॥ ११ ॥ मूत्रस्य मूत्र ॥ १२ ॥ नाम्नापत्यः
 ॥ १३ ॥ मूत्रपुत्रयो रवति ॥ १४ ॥ उपलभ्य पत्यः ॥ १५ ॥ निवाध ॥ १६ ॥ उपलभ्य मूल नूतिनिष्ठि न समासपुत्रयथाविक्रिष

१२

॥ लायः ॥ १ ॥ लका गारुधर्धभा आदिस्वयस्य निमित्तिलिगिवट्टि ॥ २ ॥ स्वनालमलभय आदिस्वयस्य नस्यट्टि
 रुवति ॥ ३ ॥ निमित्तिलिगिवट्टि कयनन ॥ ४ ॥ मूत्रेडोट्टि ॥ ५ ॥ उका नस्य उका गारुधर्धभा ॥ ६ ॥ वा ॥ ७ ॥ स्वयन ॥ ८ ॥ उका नस्य
 उका नस्य वमूत्ररुवति यका नस्य वपन ॥ ९ ॥ नाम संहायां स्यादि ॥ १० ॥ उपगव ॥ ११ ॥ वसिष्ठ स्यापत्यमिति वा
 कस्यस्य लायः ॥ १२ ॥ वासिष्ठ ॥ १३ ॥ लभक मस्यापत्य लभक म ॥ १४ ॥ नूडो मूत्रपुत्रय या लावास्व न लावदनरुवति
 ॥ १५ ॥ मूत्रपुत्रय या लावास्व न लावदनरुवति ॥ १६ ॥ मूत्रपुत्रय या लावास्व न लावदनरुवति ॥ १७ ॥ मूत्रपुत्रय या लावास्व न लावदनरुवति

पूर्ववत् ॥ अथाऽस्माकं निः ॥ अथैव स्य च का न स्य च त्वं वनि ॥ यदा क्वचिन्मसानां जमात्र स्या ॥ अथ
 नृप ॥ अथाऽस्माकं निः ॥ अथैव स्य च का न स्य च त्वं वनि ॥ यदा क्वचिन्मसानां जमात्र स्या ॥ अथ
 धनिः ॥ अथैव स्य च का न स्य च त्वं वनि ॥ यदा क्वचिन्मसानां जमात्र स्या ॥ अथ
 यहदह स्यापथ्याहदह ॥ अथैव स्य च का न स्य च त्वं वनि ॥ यदा क्वचिन्मसानां जमात्र स्या ॥ अथ
 जगिष्ठ लिम्पि रथमाद ॥ अथैव स्य च का न स्य च त्वं वनि ॥ यदा क्वचिन्मसानां जमात्र स्या ॥ अथ

८०

यः स्य च का न स्य च त्वं वनि ॥ अथैव स्य च का न स्य च त्वं वनि ॥ यदा क्वचिन्मसानां जमात्र स्या ॥ अथ
 यां वा स्या ॥ अथैव स्य च का न स्य च त्वं वनि ॥ यदा क्वचिन्मसानां जमात्र स्या ॥ अथ
 सक्तत्वात् ॥ अथैव स्य च का न स्य च त्वं वनि ॥ यदा क्वचिन्मसानां जमात्र स्या ॥ अथ
 आदि हृदि ॥ अथैव स्य च का न स्य च त्वं वनि ॥ यदा क्वचिन्मसानां जमात्र स्या ॥ अथ
 मांगय ॥ अथैव स्य च का न स्य च त्वं वनि ॥ यदा क्वचिन्मसानां जमात्र स्या ॥ अथ

श्री

[illegible]

67

23

२४
 नायः॥ ननु ददितुं नो मीमांसक इति चेत्तदर्थं मिदं वक्तुं॥ उक्तार्थं नाम प्रयोगः॥ नाम संख्यायां स्यादिति॥
 सर्वेषु नूतनात्म॥ कविद्वयोः॥ कविद्वयवत्त्वं ननु ददितुं नो मीमांसक इति चेत्तदर्थं मिदं वक्तुं॥ उक्तार्थं नाम प्रयोगः॥ नाम संख्यायां स्यादिति॥
 दृष्टो नान्यथा॥ अथ तावन्मूलवक्तव्यः॥ अस्तु नाम समूहः॥ अस्तु॥ लिङ्गावः॥ उक्तः॥ यथा यथा विषयात्
 अथ लिङ्गावः॥ अथ तावन्मूलवक्तव्यः॥ अस्तु नाम समूहः॥ अस्तु॥ लिङ्गावः॥ उक्तः॥ यथा यथा विषयात्
 ननु कस्मिन्मदस्य गन्धवत्त्वं नान्यथा॥ अथ तावन्मूलवक्तव्यः॥ अस्तु नाम समूहः॥ अस्तु॥ लिङ्गावः॥ उक्तः॥ यथा यथा विषयात्

२७३७ नक्षत्रादीनाम्

ॐ

नस्यपर्युपनिशोमदगन्धः॥धूपययः॥आवनः॥शुभः॥धूपययः॥धूपययः॥धूपययः॥
धूपययः॥विष्णुविंदः॥धूपययः॥धूपययः॥धूपययः॥धूपययः॥धूपययः॥धूपययः॥
नवकलः॥धूपययः॥धूपययः॥धूपययः॥धूपययः॥धूपययः॥धूपययः॥
दीयः॥ममददीयः॥कविन्दः॥धूपययः॥धूपययः॥धूपययः॥धूपययः॥
सोददीयः॥यस्यददीयः॥नस्यददीयः॥धूपययः॥धूपययः॥धूपययः॥

८२

अथनस्यपः॥वसुवस्यवलापलापः॥वसुवस्यवलापलापः॥वसुवस्यवलापलापः॥
सः॥सुवस्यवलापलापः॥सुवस्यवलापलापः॥सुवस्यवलापलापः॥
कादपः॥सुवस्यवलापलापः॥सुवस्यवलापलापः॥सुवस्यवलापलापः॥
ययः॥उक्तः॥धूपययः॥धूपययः॥धूपययः॥धूपययः॥
वसुवस्यवलापलापः॥वसुवस्यवलापलापः॥वसुवस्यवलापलापः॥

63

[illegible]

उर्वर्यः ॥ स्वार्थः ॥ विलोचनः ॥ वानवद्वेनः ॥ सर्वग्यस्य लोपः ॥ मूलान्यायस्य दसदास्य वृत्तादिः ॥ मूलान
 याः ॥ पुत्र्याः ॥ यत्र या पुत्र्या दसदास्य वृत्तादिः ॥ नावकः ॥ मामकः ॥ नावकीनः ॥ मामकीनः ॥
 ॥ नूनः ॥ मूलाः ॥ यत्र या नावकीनः ॥ मूलान्यायस्य दसदास्य वृत्तादिः ॥ नावकः ॥ मामकः ॥ नावकीनः ॥ मामकीनः ॥
 ॥ मूलान्यायस्य दसदास्य वृत्तादिः ॥ नावकः ॥ मामकः ॥ नावकीनः ॥ मामकीनः ॥
 ॥ उदनीः ॥ पटवत्कम्बलीः ॥ गवतल्ययः ॥ गदस्य पटवत्कम्बलीः ॥ गदस्य पटवत्कम्बलीः ॥ गदस्य पटवत्कम्बलीः ॥

॥

८५

यावत्किं ॥ वाक्कलस्य गवाक्कलस्य ॥ नाकस्य निर्याकुलिङ्गापत्तयवनपुसकत्वं ॥ वाक्कलस्य गवाक्कलस्य ॥
 नसीपुष्पात्तगावः ॥ सोमनस्य ॥ सोमनस्य ॥ वेदस्य ॥ सर्वग्यस्य लोपः ॥ समाह्वनगावत्कुलस्य ॥ समाह्वनगावत्कुलस्य ॥
 मगुलः ॥ यत्र यात्तमाह्वनः ॥ मगुलः ॥ यत्र यात्तमाह्वनः ॥ मगुलः ॥ यत्र यात्तमाह्वनः ॥ मगुलः ॥ यत्र यात्तमाह्वनः ॥
 कककोककः ॥ यत्र यात्तमाह्वनः ॥ कककोककः ॥ यत्र यात्तमाह्वनः ॥ कककोककः ॥ यत्र यात्तमाह्वनः ॥
 की ॥ यत्र यात्तमाह्वनः ॥ कककोककः ॥ यत्र यात्तमाह्वनः ॥ कककोककः ॥ यत्र यात्तमाह्वनः ॥

वर्जितायः॥वाणद्वान्॥साधुथाद्येयल॥कर्मलिमाधु॥कर्मस्थः॥सत्यायसाधु॥सत्यः॥यद्यमदिनीयलस्य॥नन
नका॥न॥॥॥यादिययागवसागरुय॥मृणयलनलिर्त्वी॥लादिनादकिदिमन॥लादिनादमत्सहृवार्ध॥नैपयः
यारवनि॥सवकिन॥गिखादिलायः॥लादिनस्यतावा॥लादिनिमा॥कालस्यताव॥कालिमा॥मृत्स्थहृवमृगि
मातायक्षयादीर्घः॥हृमयः॥मलायः॥नाम्नायल्लक्ष्मी॥यक्ष्मादिना॥लादिनर्त्वी॥लोदिर्य॥लघिमा॥लघूना॥
लाघवे॥लघूर्त्वी॥मनव॥मनि॥मवर्त्तुस्यवारवनि॥मनिपव॥मृत्सवकिन॥पृथ्व्याव॥यथिमा॥मृदात्तावामदि

[illegible]

